एशिया-यूरोप सहयोग का महत्व

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

लाइव मिंट

लेखक- राहुल मिश्रा (वरिष्ठ व्याख्याता, एशिया-यूरोप संस्थान, मलाया विश्वविद्यालय)

29 अक्टूबर, 2018

एशिया-यूरोप मीटिंग, एशिया-यूरोप वार्ता के लिए सबसे बेहतर मंच है। इस प्रकार यह दोनों महाद्वीपों के देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह डोनाल्ड ट्रम्प के चुनौतियों से वैश्विक राजनीति में एक मजबूत भूमिका निभाने में सक्षम बन सकता है।

ब्रुसेल्स में 18-19 अक्टूबर को आयोजित, दो दिवसीय द्विवार्षिक 12वीं एशिया-यूरोप मीटिंग इन मुद्दों के ही आसपास था। इस बैठक का शीर्षक ग्लोबल पार्टनर्स फॉर ग्लोबल चैलेंज था, जिसमें इस बात पर विचार-विमर्श किया गया कि बहुपक्षीय वार्ता के माध्यम से बहुपक्षवाद और वैश्विक कॉमन्स से जुड़े मुद्दों को सुरक्षित रखने और संरक्षित करने के लिए एशिया और यूरोप कैसे मिलकर काम कर सकते हैं। उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने शिखर सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया और सरकार के लिए प्रमुख चिंताओं और प्राथमिकताओं पर प्रकाश डाला।

वर्ष 1996 में स्थापित एशिया-यूरोप मीटिंग एक अनौपचारिक अंतर-सरकारी वार्ता मंच के रूप में कार्य करता है। विस्तार के पांच राउंड के माध्यम से, उसने सदस्यता में दो गुना वृद्धि दर्ज की है, जहाँ वर्ष 1996 में 26 थी, वहीं 2018 में यह बढ़कर 53 हो गयी है। इसमें दो क्षेत्रीय संगठन, आसियान (दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ) सेक्रेटेरियट और यूरोपीय आयोग भी शामिल है। एशिया ने चीन, भारत, रूस, मलेशिया, इंडोनेशिया, जापान और दक्षिण कोरिया जैसी प्रमुख और मध्यम शक्तियों सहित 21 देशों के साथ अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज की है।

विस्तार के दूसरे दौर के दौरान भारत को शामिल करने के बाद 2007 में भारत एशिया-यूरोप मीटिंग में शामिल हो गया। युद्ध के बाद यूरोप के साथ इसका सहयोग 1950 के दशक से संबंधित है, जब यूरोपीय संघ (ईयू) के पूर्ववर्ती, यूरोपीय आर्थिक समुदाय की स्थापना हुई थी। वर्ष 2000 से यूरोपीय संघ के साथ भारत का अपना शिखर तंत्र है, जिसे 2004 के भारत-यूरोपीय संघ रणनीतिक साझेदारी समझौते के साथ और समेकित किया गया था।

एशिया-यूरोप मीटिंग की संभावना इस तथ्य में निहित है कि इसमें विश्व की 60% आबादी, वैश्विक व्यापार के आधे से अधिक और वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद के लगभग दो तिहाई शामिल हैं। इसके अलावा, इसमें चार संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सदस्य, दक्षिण अफ्रीका को छोड़कर सभी ब्रिक्स सदस्यों और जी-20 सदस्य देशों में से 12 शामिल हैं। हालांकि, इनमें से अधिकतर देश अभी भी अपनी वास्तविक ताकत में तब्दील नहीं हुए है।

फिर भी, वैश्विक शक्ति और भू-अर्थशास्त्र में चल रही बदलाव और उदार अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में आवेग, एशिया-यूरोप मीटिंग को तेजी से प्रासंगिक बनाते हैं। एशियाई विकास में यूरोप एक प्रमुख हितधारक रहा है। किसी के लिए भी यूरोपीय संघ आसियान, भारत और चीन के सबसे बड़े व्यापार और निवेश भागीदारों में से एक है। यह भारत और आसियान दोनों में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का सबसे बड़ा स्रोत है।

एशिया और यूरोप दोनों अमेरिका द्वारा बनाई गई अनिश्चितताओं से सावधान हैं। संरक्षणवादी व्यापार नीतियों में वृद्धि, जलवायु परिवर्तन शमन पर पेरिस समझौते से वापसी और बहुपक्षीय वार्ता के लिए ट्रम्प की उपेक्षा महत्त्वपूर्ण आम चुनौतियों का सामना करती है। जबकि चीन ट्रम्प प्रशासन के व्यापार शुल्क का मुख्य लक्ष्य है, यूरोपीय संघ, जापान और भारत वैसे भी कमजोर हैं।

ब्रेक्सिट के बाद ईयू का ध्यान एशिया पर अधिक केंद्रित है। हाल के रुझान बताते हैं कि एशियाई विकास के साथ और अधिक एकीकृत होना चाहता है। फ्रांस और जर्मनी जैसे प्रमुख यूरोपीय देश भी एशियाई सुरक्षा गतिशीलता में अधिक शामिल हो रहे हैं।

दिल्ली के लिए, चीन और अमेरिका दोनों के साथ संबंध किसी कसौटी से कम नहीं हैं। चीन की बेल्ट और रोड पहल (बीआरआई) और ट्रम्प की टैरिफ बाधाएं और एच -1 बी वीजा मुद्दा भारत के लिए चिंता का प्रमुख क्षेत्र हैं। उस संदर्भ में, यूरोपीय संघ और एशियाई शक्तियों के साथ अधिक सहयोग नए रास्ते का निर्माण कर सकता है। ईरान, भारत, चीन और यूरोपीय संघ जैसे आर्थिक रूप से मजबूत देशों का साथ महत्त्वपूर्ण सामरिक मुद्दों पर भी काफी हद तक सहायक सिद्ध हो सकता हैं।

एशिया-यूरोप कनेक्टिविटी एक और महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। यूरोपीय संघ ने हाल ही में एशिया, यूरोप के बीच प्राकृतिक, आर्थिक, डिजिटल और मैन टू मैन कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने के लिए एक नीति दस्तावेज जारी किया है। यूरोपीय आयोग द्वारा तैयार, दस्तावेज, यूरोप और

एशिया को जोड़ने, यूरोपीय संघ रणनीति के लिए बिल्डिंग ब्लॉक, यूरोप में लोगों और समाजों की समृद्धि, सुरक्षा और लचीलापन को बढ़ाने के लिए टिकाऊ, व्यापक और नियम-आधारित कनेक्टिविटी की आवश्यकता पर जोर देती है। यदि यूरोपीय संघ इन सिद्धांतों को परिचालित करने की दिशा में आगे बढ़ने में सक्षम है, तो इसमें महत्त्वपूर्ण आर्थिक सफलता हासिल होगी।

चीन की अरबों डॉलर की बीआरआई परियोजना के जवाब के रूप में यह कनेक्टिविटी योजना मद्दगार साबित होगी। उनकी व्यक्तिगत कनेक्टिविटी और आउटरीच पहल के अलावा, जापान (गुणवत्ता निवेश के लिए साझेदारी) और भारत (सागरमाला) अंतर-क्षेत्रीय कनेक्टिविटी के लिए एशिया-अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर पर मिलकर काम कर रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका के साथ, दोनों भारत-प्रशांत कनेक्टिविटी पर भी काम कर रहे हैं। इस संदर्भ में, यूरोपीय संघ अपनी अनुपस्थिति से स्पष्ट था। इस प्रकार, यह योजना एक बेहतर है, भले ही यह इसके मुकाबले थोड़ी सी धीमी हो।

ईयू रणनीति एशियाई देशों के लिए एक अच्छा ओमेन है जो एक नियम-आधारित और पारदर्शी बहुपक्षीय सहयोग तंत्र की तलाश में है जो अधिक अंतर-क्षेत्रीय, क्षेत्रीय और अंतर-क्षेत्रीय कनेक्टिविटी के लिए गुणवत्ता निवेश प्रदान कर सकती है। यह देखना दिलचस्प होगा कि यूरोपीय संघ की भागीदारी पर जिस तरह से चीन बीआरआई लागू कर रहा है, उस पर असर पड़ सकता है। हालांकि, यह सब चेतावनी के साथ आता है। आसियान के लिए, आंतरिक एकता को बढ़ाकर इसकी एकता को चुनौती दी जा रही है।

एशियाई और यूरोपीय देशों को कई मुद्दों पर करीब लाने में एशिया-यूरोप मीटिंग महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह उस समय महत्त्वपूर्ण है जब अमेरिका वैश्वीकरण के लाभ को बाधित कर रहा है। हालांकि, बहुपक्षवाद और मुक्त व्यापार को वापस करने के लिए एशिया और यूरोप में राजनीतिक इच्छाशक्ति की आवश्यकता होगी।

GS World टीम...

एशिया-यूरोप बैठक

संदर्भ

- हाल ही में ग्लोबल एजिंग तथा वृद्ध व्यक्तियों के मानवाधिकार पर तीसरे ASEM (एशिया-यूरोप बैठक) सम्मेलन का आयोजन दक्षिण कोरिया की राजधानी सीओल में किया गया।
- इस सम्मेलन का आयोजन दक्षिण कोरिया तथा कोरियाई मानवाधिकार आयोग द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

मुख्य बिंदु

- इस तीन दिवसीय सम्मेलन में कई अंतर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे संयुक्त राष्ट्र, UNESCAP, UNECE, यूरोपीय संघ, आसियान, GANHRI इत्यादि ने हिस्सा लिया।
- भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व सामाजिक न्याय व सशक्तिकरण मंत्री थावरचंद गहलोत ने किया। इस सम्मेलन में वृद्ध जनों के अधिकारों तथा उनके साथ होने वाले भेदभाव पर चर्चा की गयी।
- इसके अलावा ASEM सदस्य देशों द्वारा वृद्ध जनों के अधिकारों की रक्षा पर परस्पर सहयोग पर प्रकट की गयी।
- इस सम्मेलन से प्राप्त अनुभव का उपयोग वरिष्ठ नागरिकों के लिए नीति निर्माण में किया जायेगा।

एशिया-यूरोप बैठक (ASEM)

- इसमें एशिया और यूरोप से 51 देश वार्ता में हिस्सा लेते हैं। इसकी स्थापना मार्च, 1996 में की गयी थी, इसके पहले सम्मेलन का आयोजन थाईलैंड की राजधानी बैंकाक में की गयी थी।
- यह विश्व की 62.3% जनसँख्या, 57.2 जीडीपी तथा विश्व के 60% व्यापार का प्रतिनिधित्व करता है।
- इस सम्मेलन में राजनीतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक मुद्दों पर चर्चा की जाती है।

एशिया-यूरोप बैठक (ASEM) के सदस्य

- वर्तमान में एशिया-यूरोप बैठक (ASEM) के कुल 53 सदस्य हैं, इसमें 51 देश तथा 2 क्षेत्रीय संगठन शामिल हैं। ASEM के सदस्य देश हैं : ऑस्ट्रेलिया, ऑस्ट्रिया, बांग्लादेश, बेल्जियम, ब्रुनेई, बुल्गारिया, कंबोडिया, चीन, क्रोएशिया, सायप्रस, चेक गणराज्य, डेनमार्क, एस्तोनिया, फिनलैंड, फ्रांस, जर्मनी, ग्रीस, हंगरी, भारत, इंडोनेशिया, आयरलैंड, इटली, जापान, कजाखस्तान, दक्षिण कोरिया, लाओ PDR, लाटविया, लिथुआनिया, लक्सेम्बर्ग, मलेशिया, माल्टा, मंगोलिया, म्यांमार, नीदरलैंड, न्यूजीलैंड, नॉर्वे, पाकिस्तान, फिलीपींस, पोलैंड, पुर्तगाल, रोमानिया, रूस, सिंगापुर, स्लोवाकिया, स्लोवेनिया, स्पेन, स्वीडन, स्विट्जरलैंड, थाईलैंड, यूनाइटेड किंगडम तथा वियतनाम।
- 51 देशों के अतिरिक्त ASEM को अन्य सदस्य क्षेत्रीय संगठन यूरोपीय संघ और आसियान सचिवालय हैं।

GS World Committed To Excellence

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. एशिया-यूरोप मीटिंग के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

1. यह एक अनौपचारिक अंतर-सरकारी वार्ता मंच के रूप में कार्य करता है।
2. इसकी स्थापना वर्ष 1996 में की गयी थी।
3. भारत, एशिया-यूरोप मीटिंग में शामिल हो गया है।

नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर चुनिए-

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्र. 'यूरोप, एशिया के लिए जितना महत्त्वपूर्ण है उतना ही एशिया, यूरोप के लिये।' इस कथन के संदर्भ में एशिया यूरोप सहयोग के महत्व की चर्चा कीजिए। (शब्द-250)

नोट :

27 अक्टूबर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(d) होगा।

GS World
Committed To Excellence